वर्ष:2 अंक:12 दिसंबर 2018
आर.एन.आई. पंजीकरण क्रमांक
जे-7, श्रीरामनगर, रायपुर (छ.ग.)
CHHHIN/2017/72506

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा , शेख अजहरुद्दीन

प्यारे बच्चों,
त्योहारों का मौसम अब समाप्त हो गया और पढ़ाई करने तथा परीक्षाओं की तैयारी का मौसम आ गया है. मुझे विश्वास है कि आप पूरी मेहनत से पढ़ाई कर रहे होंगे. स्कूलों में इसी समय पर खेल-कूद के कार्यक्रम और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी होता है. इन कार्यक्रमों में भी आप सब बढ़चढ़ कर हिस्सा लें और अपने अनुभव हमें लिख भेजें. सर्दियों का मौसम फूलों का और विशेषकर गुलाबों का मौसम होता है. आप सब हमेशा गुलाब की तरह ही हंसते मुस्कुराते रहें ऐसी हमारी कामना है.

किलोल को लगातार अच्छी रचनाएं प्राप्त हो रही हैं. शायद कुछ स्कूलों ने आस-पास से धन एकत्रित करके पत्रिका को छापकर बच्चों में वितरित करना भी प्रारंभ किया है. यह बड़ी अच्छी पहल है. किलोल के लिये कहानी, गीत, कविताएं, पहेलियां, चुटकुले आदि का हमेशा की तरह स्वागत है. हमेशा की तरह किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है.

आलोक शुक्ला

<u>सच्चा मित्र</u>

लेखक - विवेकानंद दिल्लीवार

एक पत्ते एवं एक मिट्टी के ढेले में गहरी मित्रता थी. दोनो एक दूसरे के लिये मर मिटने को तैयार थे. एक दिन खूब बारिश होने लगी. मिट्टी के ढेले ने पत्ते से कहा - "मित्र अब तो मैं नही बचूंगा. आज के बाद हम दोनों जुदा जो जाएंगे." यह सुनकर पत्ते ने ढ़ांढ़स बंधाते हुए कहा - "मित्र हम दोनों को कोई अलग नही कर सकता. भले ही मैं पानी मे पड़ा रहूं मगर तुमको मुझसे जुदा नही होने दूंगा. ऐसा कहकर पत्ते ने स्वयं पानी मे भीगते हुए मिट्टी के ढ़ेले को ऊपर से ढ़क लिया. इस प्रकार ढ़ेले की जिंदगी बच गई.

कुछ दिन बाद तेज आंधी आई. पत्ते ने ढेले से कहा - "मित्र ये आंधी तो मुझे तुमसे दूर ले लाएगी. मेरे दोस्त तुम्हे खोकर मैं जी नहीं सकता. कही गिरकर मर जाउँगा." ढेले ने कहा - "दोस्त एक दिन पानी से तुमने मेरी जिंदगी बचाई थी. आज मैं तुम्हे आंधी तूफान से बचाऊंगा." ऐसा बोलकर ढ़ेला पत्ते के ऊपर बैठ गया और उसने अपने दोस्त को बचा लिया.

बच्चो सच्चा मित्र वही है जो मुसीबत में काम आए.

The Selfish Horse

Author - Dilkesh Madhukar

Once, a trader had a donkey and a horse. Everyday, he would load the donkey heavily and go to the city to sell things. One hot day, the donkey started feeling dizzy. He asked the horse to take some of his load but the horse refused saying that it was not his duty to carry loads.

Soon the donkey fell down and died due to extreme heat. The trader then put all the load on the horse's back and continued his journey.

So, it's true that one who does not help his friend in need, has to himself face problems in the long run.

Moral- Don't be greedy.

Difficult words-

Trader- व्यापारी	Load-बोझ लादना
heavily- बहुत अधिक	everyday- प्रतिदिन
Dizzy- चक्कर	refused – असहमत, मना करना
duty - कर्तव्य, काम	fell down - नीचे गिर जाना
died - मर गया	due - ऋण
extreme - तीव्र	Greedy- लालची

<u>एक प्रयास बदलाव की ओर</u>

लेखिका - श्वेता तिवारी

एक गांव है राजपुर. वहाँ का प्रकृतिक वातावरण बहुत ही निर्मल है. ग्रामीण भी सभी अपने अपने कामो मे व्यस्त रहते थे.

गांव मे जो प्राथमिक सुविधाएं मिलनी चाहिए वे सभी वहां थीं. बच्चों के पढ़ने सीखने के लिए विद्यालय भी था, परन्तु विद्यालय की दशा अच्छी नहीं थी. शिक्षक विद्यालय मे बड़ी लगन एवं मेहनत से शिक्षा देते थे. उन्हीं मे एक शिक्षक थे श्री चंदन व्दिवेदी गुरूजी. वे अपने छात्रों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ साथ व्यवहारिक ज्ञान भी देना चाहते थे. उन्होने अपनी यह इच्छा अपने शिक्षक समूह के सामने रखी तो तो सभी कहने लगे कि व्दिवेदी सर आपकी सोच तो बहुत ही

बढ़िया है, परंतु हम यह कैसे कर पाएँगे. हमारा पाठ्यक्रम कैसे पूरा हो पाएगा. छात्रों मे हम दक्षता कैसे ला पाएँगे. तब व्दिवेदी गुरूजी ने कहा यह भी हो जाएगा. पुस्तकीय शिक्षा और व्यवहारिक शिक्षा दोनों का हम साथ साथ अभ्यास कराएँगे. बस इतना है कि हमे मेहनत थोड़ी ज्यादा लगेगी. सारे शिक्षक साथी मन बनाकर तैयारी मे जुट गये. विद्यालय की छुट्टी के पश्चात व्दिवेदी गुरूजी गांव के लोगो से चर्चा करने पहुंच गए. अगले दिन बैठक मे जब पालक आये तब उन्हें भी विद्यालय के विभिन्न कार्यो के बारे मे अवगत कराया गया. एक पालक ने कहा कि मै बच्चों को गीत और कविता सिखा सकता हूँ. फिर क्या था अगली सुबह होते ही विद्यालय में बच्चों को सिखाने पढ़ाने का काम आरंभ हो गया. गोविंद काका ने उन्हें पुरानी वस्तुओं से कागज से खिलौने बनाने सिखाये. अब तो बच्चों का मन विद्यालय मे रमने लगा. परंतु कुछ पालको को यह बात अच्छी नहीं लग रही थी. वे अगली बैठक मे विद्यालय पहुंचे और शिक्षकों के ऊपर नाराजगी जाहिर की. व्दिवेदी गुरूजी ने उन्हें समझाते हुए कहा - "देखिए विद्यालय मे छात्रों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ साथ व्यवहारिक शिक्षा देना भी जरूरी है. तभी एक पालक बोल उठे कि हमारा बच्चा अच्छे से नहीं पढ़ेगा तो फिर उसकी नौकरी कैसे लगेगी? तब गुरूजी ने उन्हें समझाते हुए कहा कि मान लो अगर नौकरी नहीं लगती है तो हमारे हाथ मे हमारा हुनर तो है. हम इसी के सहारे आगे बढ़ जाएंगे. अब के समय मे ऐसा नही कि सभी को नौकरी मिल जाए. गुरूजी की इन बातों को सुनकर पालक शांत और आशान्वित होकर विद्यालय के हर कार्यक्रम मे सहयोग देने का निश्चय करके अपने घर लौटे. विद्यालय मे अगले कुछ दिनों मे श्रमदान करने वाले की संख्या बढने लगी. पालकों को यह लगने लगा कि हम अपने बच्चों के स्वस्थ और समृध्द जीवन के लिए यह कार्य कर रहे हैं. गांव मे बुधिया नाम के एक माली काका थे. उन्होने बच्चों को बागवानी सिखाने का प्रस्ताव रखा. विद्यालय के पीछे खाली जमीन पडी थी. उसमे बागवानी शुरू की

गई. धीरे धीरे क्यारियाँ तैयार हो गईं और माली काका ने ग्राम पंचायत उद्यान विभाग से पौधे लाकर रोप दिये. बच्चे प्रतिदिन खाद पानी डालते गए और पौधे दिन प्रतिदिन बढते चले गए. कुछ दिनों में फूल खिलने लगे. इसे देखकर बच्चों का मन खुशी से झूम उठा. गाँव के विद्यालय की सुन्दरता बढती चली गई. अब हर रोज बच्चों को विद्यालय के सुन्दर एवं स्वच्छ माहौल मे नित नई शैक्षणिक गतिविधियों के व्दारा शिक्षा दी जाने लगी. बच्चे सतत रुप से रोज विद्यालय आने लगे और शिक्षा के स्तर मे एक अभूतपूर्व परिवर्तन देखने को मिला.

इसी बीच व्दिवेदी सर का स्थानांनतरण दूसरे विद्यालय मे हो गया. बच्चे और पालक समुदाय सभी की इच्छा थी की गुरूजी उन्हें और उनके विद्यालय को छोड़कर ना जाएँ. सभी के आँखों से आँसू बहने लगे. गुरूजी ने उन्हें समझाया कि आप सब लोग समय समय पर अपना अमूल्य सहयोग विद्यालय को देते रहें. मै आप सभी से मिलने समय समय पर आऊँगा. यह वादा करके गुरूजी दूसरे विद्यालय की ओर जाने की तैयारी करने में लग गए.

बेटी

लेखक - अजय कुमार कोशले

एक छोटा सा कसबा था. वहां एक व्यापारी अपनी पत्नी और पांच बेटियों के साथ रहता था. एक बार व्यापारी की पत्नी फिर से गर्भवती थी. व्यपारी ने अपनी पत्नी से कड़े और उदासी भरे शब्दों में कहा - 'इस बार मुझे बेटा चाहिए. यदि इस बार बेटा नही हुआ तो मैं बच्चे को बाहर फेंक आउंगा.' यह बात सुनकर उसकी पत्नी रोने लगी. समय बीता और उसकी पत्नी ने एक सुंदर बेटी को जन्म दिया. बेटी के जन्म से व्यापारी को कोई खुशी नहीं हुई. उसने उस नवजात बच्ची को बाहर ले जाकर फुटपाथ पर छोड़ दिया और वापस घर आ गया.

अगली सुबह व्यापारी उस यह देखने उस स्थान पर फिर से गया कि कोई उस बच्ची को ले गया अथवा नहीं. बच्ची वहीं पड़ी थी. व्यापारी उसे घर ले आया और दूध पिलाकर वापस वहीं छोड़ आया. ऐसा उसने कई दिनो तक किया, पर जब बच्ची को कोई नहीं ले गया तो व्यापारी उसे अपने ही घर पर रखने को मजबूर हो गया.

इस बीच व्यापारी की पत्नी पुन: गर्भवती हुई और इस बार उसने लड़के को जन्म दिया. परन्तु लड़के के जन्म के साथ ही व्यापारी की बड़ी बेटी की मृत्यु हो गई. समय चक्र चलता रहा. व्यापारी के एक के बाद एक लड़के होते गए, पर हर लड़के के जन्म के साथ एक बेटी की मृत्यु हो जाती थी. इस तरह व्यापारी के पांच लड़के हो गए और पांच लड़कियों की मृत्यु हो गई. अब केवल छठवीं लड़की बची थी, जिसे व्यापारी ने बाहर फेंकने की बहुत कोशिश की थी पर कामयाब नहीं हुआ था.

समय बीतता गया. व्यापारी बूढ़ा हो गया. उसने अपने सभी बेटों की शादी कर दी. सब अपनी गृहस्थी में व्यस्त हो गए और अपने माता-पिता को छोड़ कर अन्य स्थानों पर रहने लगे. एक दिन व्यापारी बीमार पड़ गया तो उसकी लड़की ने ही उसकी सेवा की जिससे वह ठीक हो गया. बेटी की सेवा को देख कर व्यापारी की आंखों में आंसू आ गए. वह बोला - 'मैं भी कितना पापी हूं. तुम्हें बुरा समझकर में बचपन में तुम्हे फेंकने चला था. मुझे माफ कर दो बेटी.'

व्यपारी की बेटी ने उत्तर दिया - 'बाबा मैं तो बहुत छोटी थी. मुझे तो कुछ याद नहीं. तुम भी बुरा सपना समझकर इसे भूल जाओ. मैं तो तुम्हारी लाड़ली बेटी हूं.'

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिए दी थी -

बुध्दिमान खरगोश

एक बड़े से जंगल में शेर रहता था. शेर गुस्से का बहुत तेज था. सभी जानवर उससे बहुत डरते थे. वह सभी जानवरों को परेशान करता था. वह आए दिन जंगलों में पशु-पक्षियों का शिकार करता था. शेर की इन हरकतों से सभी जानवर चिंतित थे. एक दिन जंगल के सभी जानवरों ने एक सम्मेलन रखा. जानवरों ने सोचा शेर की इस रोज-रोज की परेशानी से तो क्यों न हम खुद ही शेर को भोजन ला देते हैं. इससे वह किसी को भी परेशान नहीं करेगा और खुश रहेगा.

सभी जानवरों ने एकसाथ शेर के सामने अपनी बात रखी. इससे शेर बहुत खुश हुआ. उसके बाद शेर ने शिकार करना भी बंद कर दिया. एक दिन शेर को बहुत जोरों से भूख लग रही थी. एक चतुर खरगोश शेर का खाना लाते-लाते रास्ते में ही रुक गया. फिर थोड़ी देर बाद खरगोश शेर के सामने गया. शेर ने दहाड़ते हुए

खरगोश से पूछा इतनी देर से क्यों आए? और मेरा खाना कहां है?

चतुर खरगोश बोला, शेरजी रास्ते में ही मुझे दूसरे शेर ने रोक लिया और आपका खाना भी खा गया. शेर बोला इस जंगल का राजा तो मैं हूं यह दूसरा शेर कहां से आ गया.

इस कहानी को बहुत से लोगों ने पूरा करके भेजा है. उसमें से कुछ हम नीचे दे रहे हैं.

श्रीमती नंदनी राजपूत व्दारा पूरी की गई कहानी

शेर गुस्से में बोला आखिर यह दूसरा शेर कहां है ? मुझे उसके पास ले चलो. खरगोश तैयार हो गया और उसे उस जगह पर ले गया. वहां जाकर शेर ने पूछा - दूसरा शेर कहां है ? खरगोश ने एक कुएं की तरफ इशारा करते हुए कहा - वह दूसरा शेर इसी अंधेरी गुफा में है. वही आपका खाना खाना खा गया है.

चूंकि शेर बहुत गुस्से में था, इसलिए बिना सोचे समझे अपने शत्रु से लड़ने के मकसद से वह उस कुएं में कूद गया. फिर वहां से वह वापस नहीं आ पाया. सिर्फ उसके दहाड़ने की आवाज़ ही अब भी सुनाई देती है. इस प्रकार बड़ी ही चतुराई से चतुर खरगोश ने जंगल के सभी जीव जंतुओं को उस शेर से मुक्ति दिलाई.

विश्वविजय मरकाम व्दारा पूरी की गई कहानी

शेर ने कहा - वहां शेर कहां है ? चलो मुझे उसके पास ले चलो. खरगोश उसे एक कुएं के पास ले गया और बोला - वह शेर इसी कुए के अंदर छिपा है. शेर ने कुएं में झांका तो उसे अपनी परछाई दिखाई दी. उसे उसने दूसरा शेर समझा. वह अपने दुश्मन को मारने के लिए जोर-जोर से दहाड़ने लगा. उसकी आवाज कुएं से वापस आने लगी. शेर गुस्से में आ गया और अपनी परछाई को दुश्मन समझकर मारने

के लिए कुएं में कूद गया और पानी में डूब कर मर गया. अब सभी जानवर खुशी-खुशी रहने लगे.

अदिति देवांगन व्दारा पूरी की गई कहानी

तो फिर खरागोश ने शेर से कहा - शेर जी मुझे हूबहू आप जैसा ही एक शेर नज़र आया तो मैने उसे आप का खाना दे दिया मगर उसकी भूख कम ही नहीं हो रही थ्सी और वह जितना खाना खाता था उतना ही छोटा होता जा रहा था. मालिक मै तो किसी प्रकार अपनी जान बचाकर आया हूं. अब आप ही समझो कि उस शेर के साथ आप क्या कर सकते हो.

यह सुनने के बाद शेर घबरा गया और बोला - मुझे उस शेर के पास ले चलो जिसे तुमने मेरा खाना खिलाया है, और जिसे खाकर वह छोटा हो गया है. चतुर खरगोश में जंगल के बीच एक मृत बिल्ला रख दिया था और उसपर गीली हल्दी लगा दी थी जिससे वह बिल्कुल शेर जैसा दिखने लगा था.

जब शेर ने उस मृत बिल्ले को देखा तो सोचा कि मेरा खाना खाने से यह शेर छोटा होगा गया और अंत में इसकी मृत्यु हो गई. अगर मैं भी इस जंगल का खाना लगातार खाउंगा तो एक दिन मेरी भी मृत्यु हो जायेगी. यह सोचकर वह बेवकूफ शेर वहां से भाग गया और फिर लौटकर कभी नहीं आया. अब जंगल के सब जानवर खुशी से रहने लगे.

राधे तिवारी व्दारा पूरी की गई कहानी

इतना सुनते ही शेर आग बबूला हो गया. क्रोधित होकर उसने खरगोश से कहा - चलो अभी दिखाओ. आज उसकी खैर नहीं. खरगोश उसे कुएं के पास ले गया, और कहा - हे जंगल के राजा आपका भोजन छीनने वाला इसी कुएं में रहता है. शेर ने

ललकार कर जैसे ही कुएं मे देखा तो अपनी ही छाया पानी में देखकर अपना आपा खो बैठा. उसने लड़ने के लिए जैसे ही कदम बढाया, धड़ाम से कुएं में गिर गया और उसकी मृत्यु हो गई. जंगल में फिर से सुख शांति छा गई. जंगल के सभी जीवों ने बुध्दिमान खरगोश की भूरि-भूरि प्रशंसा की.

शिक्षा - बिना बिचारे जो करे सो पाछे पछताय.

विश्वमोहन मिश्र व्दारा पूरी की गई कहानी

खरगोश की बात पर शेर को यकीन नहीं हुआ. उसने खरगोश से कहा -"तुम झूठ बोल रहे हो. इस जंगल में मेरे सिवा कोई दूसरा शेर नहीं है." खरगोश ने कहा - "नहीं महाराज मैं सच कह रहा हूं. आप मेरे साथ चलिये." ऐसा कहकर खरगोश शेर को अपने साथ एक ऊंची पहाड़ी पर ले गया जिसके नीचे एक गहरी झील थी. झील के पानी में शेर को अपनी परछांई दिखाई दी तो शेर ने जोर से दहाड़ लगाई. खरगोश ने शेर को उकसाते हुए कहा - ‘‘देखिये महाराज वह आपको ललकार रहा है.’’ शेर ने तैश में आकर झील में छलांग लगा दी और मर गया.

शिक्षा - हमे विपत्ति का सामना धैर्य और चातुर्य से करना चाहिए.

अगले अंक के लिये अधूरी कहानी - दो बिल्लियां और एक बंदर

बहुत समय पहले की बात है, एक गांव में 2 बिल्लियां रहती थीं. दोनों बहुत ही अच्छी दोस्त थीं और दोनों आपस में बहुत प्यार से रहती थीं. दोनों की दोस्ती का सभी लोग उदाहरण देते थे. वो दोनों बहुत ख़ुश थीं. उन्हें जो कुछ भी मिलता था, उसे आपस में मिल-बांटकर खाया करती थीं.

एक दिन दोनों दोपहर के व़क्त खेल रही थीं कि खेलते-खेलते दानों को ज़ोर की भूख लगी. वो भोजन की तलाश में निकल पड़ीं. कुछ दूर जाने पर एक बिल्ली को एक स्वादिष्ट रोटी नज़र आई. उसने झट से उस रोटी को उठा लिया और जैसे ही उसे खाने लगी, तो दूसरी बिल्ली ने कहा, “अरे, यह क्या ? तुम अकेले ही रोटी खाने लगीं ? मुझे भूल गई क्या ? मैं तुम्हारी दोस्त हूं और हम जो भी खाते हैं आपस में बांटकर ही खाते हैं.

पहली बिल्ली ने रोटी के दो टुकड़े किए और दूसरी बिल्ली की ओर एक टुकड़ा बढ़ा दिया. यह देख दूसरी बिल्ली फिर बोली, “यह क्या, तुमने मुझे छोटा टुकड़ा दिया. यह तो ग़लत है.

बस, इसी बात पर दोनों में झगड़ा शुरू हो गया और झगड़ा इतना बढ़ गया कि सारे जानवर इकट्ठा हो गए. इतने में ही एक बंदर आया.
इस मज़ेदार काहनी आपको पूरा करके हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दीजिये. अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें अनेक कहानियां मिली हैं जिनमें से कुछ को हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं.

भगवान का दूत

लेखक - विश्वविजय मरकाम

जंगल में एक लोमड़ी रहती थी. वह बहुत चालाक थी. एक दिन उसके मन में विचार आया कि वह शहर जाए. जब वह शहर में पहुंची तो बहुत से कुत्ते उसके पीछे पड़ गए. वह कुत्तों को देखकर वहां से भागने लगी. भागते - भागते वह एक दीवार के पास पहुंची. उसने दीवाल को पार करने के लिए छलांग लगाई तो उस पार एक घड़े में जा गिरी. उस घड़े में नीला रंग भरा था. वह लोमड़ी भी नीले रंग

की हो गई. तब उसके दिमाग में विचार आया कि वह जंगल में जाकर सभी जानवरों को बुध्दू बनाए. वह सभी जानवरों को कहने लगी कि मैं भगवान का दूत हूं और मुझे तुम्हारी रक्षा करने के लिए भगवान ने भेजा है. आज से तुम सब मेरा हुक्म मानना. जाओ मेरा मनपसंद खाना लाओ. तभी अन्य लोमड़ियों ने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया. उनकी आवाज को सुनकर नीली लोमड़ी अपने आप को रोक नहीं पायी और वह भी चिल्लाने लगी. तभी उसे शेर ने उसे देख लिया और मार डाला.

शिक्षा - चलाकी हर वक्त काम नहीं आती।

शिक्षा

लेखक - भगवान सिंह

एक जंगल में एक लोमड़ी रहती थी. उसके दो बेटे थे. दोनों मूर्ख थे और बहुत ही शरारती भी. उनकी मां उनको कहती थी कि तुम दोनों शेर राजा के यहां काम मांग लेना. सुबह उन दोनों की मां उन्हें लेकर शेर राजा के यहां गई. उन दोनों की मां ने शेर से कहा की कि मेरे दोनों बेटों को अपने घर में काम पर रख लीजिए. शेर राजा ने मना कर दिया. उन्होंने कहा कि मुझे अनपढ़ और मूर्ख सेवक की ज़रूरत नहीं. अगर मेरी सेवा करना है तो विव्दान सेवक बनकर दिखाओ.

लोमड़ी और उसके दोनों बच्चे लौट गए. फिर रोज़ लोमड़ी अपने बच्चों को कहती कि जाओ और कहीं से शिक्षा पाकर आओ, पर उसके दोनो बेटे नहीं मानते थे. एक दिन शाम के समय उनकी मां शहर के पास से गुज़र रही थी. अचानक उसने देखा कि एक बूढ़ा कुत्ता कुछ पालतू जानवरों को शिक्षा के बारे में कुछ बता रहा था. उस

कुत्ते का रंग नीला था. लोमड़ी मन ही मन सोचने लगी कि यही मेरे बच्चों को शिक्षा दे सकते हैं. फिर लोमड़ी अपने दोनों बच्चों को लेकर शहर की ओर चल दी. आधे रास्ते में उन्हें कुछ आदमी दिखे. आदमियों को देखकर वे भागने लगे. वे भागते - भागते किसी के बाड़े में कूद पड़े. उस बाड़े के अंदर एक बड़ा सा टब था. तीनों उस टब में गिर पड़े. वे उससे निकले तो उन्होंने देखा कि वह नीले रंग के हो चुके थे. फिर वह बूढ़े कुत्ते के पास पहुंचे. लोमड़ी ने कुत्ते से कहा कि मेरे दोनों बच्चों को अपना शिष्य बना लीजिए. कुत्ता भला था इसलिए उसने लोमड़ी के बच्चों को अपना शिष्य बना लिया. फिर लोमड़ी चली गई.

कुछ दिनों के बाद लोमड़ी के दोनों बच्चे शिक्षा ग्रहण करके जंगल में वापस पहुंचे. उसके बाद दोनों शेर राजा के यहां फिर से गए. इस बार शेर राजा ने उन दोनों को अपना मंत्री बना ही लिया.

सीख - शिक्षा के बिना किसी को कुछ नहीं मिल सकता.

<u>दयालू लोमड़ी</u>

लेखिका - कविता कोरी

एक छोटा सा गांव था जिसमें बहुत ही भले लोग रहते थे. परंतु जिस प्रकार गुलाब में कांटा होता है उसी प्रकार गांव के भले लोगो के बीच कुछ दुष्ट स्वभाव के लोग भी थे. उनमें से एक का नाम था भोला. भोला अपने नाम के उलट एकदम क्रोधी, चालाक एवं कपटी स्वभाव का था. वह अपने माता पिता की देखभाल करना तो दूर उन्हें अनेकों कष्ट भी दिया करता था. एक दिन उसने क्रोधवश अपने माता-

पिता को भोजन नहीं दिया. माँ बाप अपने आराध्य देव का ध्यान कर चुपचाप भूखे ही सो गए. सुबह जब भोला उठा तो वह एक लोमड़ी बन गया था. उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था वह क्या करे ? उसने अपने आराध्य देव से प्रार्थना की. आराध्य देव ने कहा तुम अपने माता-पिता से धूर्तता पूर्ण व्यवहार करते हो इसलिए तुम्हें लोमड़ी बना दिया गया है. जब तुम अपने माता-पिता की नि:स्वार्थ सेवा करोगे तो तुम्हें वापस मनुष्य बना दिया जाएगा. फिर क्या था, भोला अपने माता-पिता के आस पास रहने लगा और उनकी सेवा करने लगा. पहले-पहले तो उसके माता-पिता डरे, पर बाद में वे आश्वस्त हो गए. भोला खाना पकाता, लकड़ी लाता, गाय चराता, माता-पिता के पैर दबाता, उनके कपड़े धोता, उनमें नील भी चढ़ाता. कभी-कभी उसी पानी में नहाकर वह नीला भी हो जाता था. धीरे*धीरे उसे यह सब करने में मज़ा आने लगा. उसके हृदय में परिवर्तन को देखकर आराध्य देव ने उसे पुनः मनुष्य बना दिया. अब भोला अपने माता-पिता के साथ खुशी-खुशी रहने लगा.

<u>कालू लोमड़</u>

लेखक - राजेश कुमार मरावी

एक समय की बात है. एक जंगल मे कालू नाम का एक लोमड़ अपने माता पिता के साथ रहा करता था. वह जंगल में बहुत मौज मस्ती करता और खुश रहता. एक दिन कालु अपने माता पिता के साथ खाने की तलाश मे जंगल से दूर चला गया. उस रास्ते से सरकस वाले गुजर रहे थे. उनकी नजर कालू और उसके परिवार पर पड़ी. सरकस के मालिक ने अपने नोकरों से कहा - जाओ उस लोमड़ी को पकड़ लो. उससे सरकस मे काम करवाएँगे. सरकस मे काम करने वाले कालू

को पकड़ने के लिये दौड़े. कालू तथा उसका परिवार अपनी जान बचाने के लिए जी जान लगाकर भागते रहे. कालू अपने परिवार से बिछड़ गया. वह भागते-भागते एक घर मे घुस गया. उस घर मे कोई नहीं था. आँगन मे एक टब मे नीले रंग का पेंट था. कालू उस पेंट मे गिर गया. उसका शरीर पूरा नीला हो गया. कालू घर के बाहर आया तो सामने सरकस वाले थे, लेकिन उन्होने कालू को पहचाना नहीं. कालू ने देखा उसका शरीर नीला हो गया है, इसलिए वे लोग पहचान नही पा रहे हैं. कालू बहुत खुश हुआ, और अपने घर की ओर चल दिया.

धूर्त भेड़िया

लेखिका - श्रीमती नंदनी राजपूत

बहुत साल पहले की बात है. एक भेड़िया भोजन की तलाश में जंगल छोड़कर शहर की ओर निकल पड़ा. शहर में कुछ कुत्ते उसके पीछे पड़ गए. कुत्तों ने उसे खूब छकाया. अपनी जान बचाने के लिए वह एक दीवार से दूसरी ओर कूद पड़ा. वह घर किसी रंगसाज़ का था. वह धड़ाम से एक नीले रंग से भरे टब में जा गिरा. सारी रात वह उसी टब में पड़ा रहा. सुबह जब वह टब से निकला तो वह पूरी तरह से भीगा हुआ था. कुत्ते क्योंकि वह वहां से लौट चुके थे, इसलिए उसने भी वापस जंगल पहुंचने में ही खैर मनाई. जब वह एक दरिया के पास पहुंचा तो अपनी परछाई देखकर हैरान रह गया, क्योंकि उसका रंग पूरा नीला हो चुका था. उसने सोचा क्यों ना इसका फायदा उठाया जाए. उसने जंगल के सभी जानवरों को इकट्ठा किया और बोला मुझे परमात्मा ने तुम्हारा राजा बना कर भेजा है. आज से तुम सबको मेरा हुक्म अपना फर्ज समझते हुए पूरा करना होगा. जिसने जरा सा भी कोताही कि उसे मैं जान से मार दूंगा. सभी जानवर घबरा गए. उसका रंग

विचित्र था. न जाने परमात्मा ने उसे कितनी ताकत देकर भेजा है. उन सभी ने यहां तक कि शेर और चीते ने भी उसे अपना राजा मानने में अपनी भलाई समझी. सभी उसकी आज्ञा मानने लगे.

कहते हैं 100 दिन चोर के, 1 दिन साद का. हुआ यूं कि एक दिन उस भेड़िये ने बहुत सारे भेड़ियों की आवाज़ें सुनीं. पुरानी आदतें और स्वभाव जल्दी कहां छूटते हैं. वह नीला भेड़िया भी अपने आपको रोक नहीं पाया और ऊंची आवाज़ में चिल्लाने लगा. जब शेर और चीते ने उसकी आवाज सुनी तो वे झट से समझ गए कि यह परमात्मा का भेजा हुआ राजा नहीं बल्कि धूर्त भेड़िया है. शेर ने उस पर हमला कर दिया और वही उसका काम तमाम हो गया.

शिक्षा- इस कहानी से हमें यही शिक्षा मिलती है कि हमें कभी किसी के साथ धोखा नहीं करना चाहिए क्योंकि धोखा करने वाला एक ना एक दिन ज़रूर पकड़ा जाता है.

<u>मूर्ख लोमड़ी</u>

लेखक - कुलदीप यादव

एक जंगल में एक लोमड़ी रहती थी. वह दुबली पतली और कमज़ोर थी. वह रोज भोजन की तलाश में यहां वहां घूमती रहती थी. एक दिन की बात है वह भोजन की तलाश में इधर-उधर भटक रही थी, तभी उसे अचानक मांस की गंध आने लगी. वह उस गंध का पीछा करते करते हुए वहां तक पहुंच गई जहां मांस रखा था. उसने मांस को खाकर वही रात बितानी चाही. पास मे एक छोटा सा घर था जिसमें एक गरीब पेंटर रहता था. जब सुबह हुई तो वह लोमड़ी फिर भोजन की

तलाश में चली गई. उस गरीब पेंटर के पास एक बकरी थी. लोमड़ी ने उस बकरी को खाने की सोची. जब बकरी चर रही थी. लोमड़ी ने उस पर हमला बोल दिया. लोमड़ी तो दुबली पतली और कमजोर थी इसलिए वह उस बकरी को नहीं मार पाई, पर बकरी ने अपने सींगों से उसे इतनी ज़ोर से मारा कि वह एक नीले रंग से भरे बर्तन में जा गिरी जिससे उसका शरीर पूरी तरह से भीग गया और वह नीले रंग की हो गई. वह लोमड़ी उस बकरी से बचते-बचते जंगल में वापस लौट गई. उसे देख सब जानवर डर गए. लोमड़ी ने सोचा कि सब जानवर तो मुझसे डर रहे हैं, क्यों नहीं इसका फायदा उठाया जाए. उस लोमड़ी ने कहा मैं अब से इस जंगल का की रानी हूं. जो भी मेरा कहना नहीं मानेगा मैं उसे मार दूंगी. सब जानवर डर गए. सब लोग उसकी बात मानने लगे. वहीं एक छोटा खरगोश रहता था. वह बहुत चतुर था. उसने उस लोमड़ी से कहा कि लोमड़ी रानी आपकी जगह को कोई लेना चाहता है. लोमड़ी ने गुस्से से कहा - कौन है वह ? मुझे उसके पास ले चलो. खरगोश लोमड़ी को एक तालाब के किनारे ले आया. अपनी परछाई को देखते हुए लोमड़ी ने गुस्से से तालाब में छलांग मार दी. तालाब में छलांग लगाने की वज़ह से उसके शरीर का रंग नीला रंग तालाब के पानी से धुल गया. उसका सारा भेद खुल गया.

शिक्षा- झूठ का समय ज्यादा दिन के लिए नहीं रहता.

अगले अंक के लिए कहानी लिखने के लिये चित्र नीचे दिया है -

अब आप इस चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

सरस्वती वंदना

लेखिका - स्नेहलता "स्नेह"

पद्मासिनी वरदान दो
जड़ता मिटा कर ज्ञान दो
नव प्रेरणा नव प्राण दो
पद्मासिनी वरदान दो

हे ज्योतिका, स्वरसाधिका
तुम ही हरो तम उर्मिका
रौशन जगत वसुधान दो
जड़ता मिटा कर ज्ञान दो

हे मान देवी, हंसिका
किशलय नवल दो पल्लिका
जड़ चेतना प्रतान दो
जड़ता मिटा कर ज्ञान दो

ये स्नेहयम संसार हो
उत्तम मनुज व्यवहार हो
पूजन दिशा ईशान दो
जड़ता मिटा कर ज्ञान दो

माँ ईषिका, तुम तारिका
तुम गीतिका, तुम कंजिका
हर होंठ पर मुस्कान दो
जड़ता मिटा कर ज्ञान दो

आज इसकूल जाहूं

लेखक - बलराम नेताम

आज स्कूल जाहूं पढ़े-लिखे बर,
पढ़े-लिखे बर हो संगी, अपन जिनगी बर,
आज इसकूल जाहु पढ़े लिखे बर,
इसकुल हमला जाना हे,जम्मो शिक्षा पाना हे,
दाई ददा के नाम ला संगी, जग मा जगाना हे ॥

आज इसकूल जाहु, पढ़े लिखे बर,
पढ़े लिखे बर संगी, जिंनगी गढ़े बर,
सजे हाबे इसकूल बढ़, निक लागे ना,
चंपा चमेली मन्दार ह, मन ला भाये ना ॥

आज इसकुल जाहूं, संगी पढ़े-लिखे बर,
पढ़े-लिखे बर हो संगी, अपन जिंनगी बर
अड़बड़ भीड़ लगे हे, आज इसकूल मा,
कोनो धरे हे कापी पेन, कोनो धरे हे झोला
देखके बढ़ निक लागे, संगी मोला ।।

आज इसकूल जाहु, संगी पढ़े-लिखे बर
पढ़े लिखे बर हो संगी, अपन जिनगी बर ॥

गिनती

लेखक - महेन्द्र देवांगन "माटी"

एक चिड़िया आती है, चींव चींव गीत सुनाती है ।
दो दिल्ली की बिल्ली हैं, दोनों जाती दिल्ली हैं ।
तीन चूहे राजा हैं, रोज बजाते बाजा हैं ।
चार कोयल आती हैं, मीठे गीत सुनाती हैं ।
पाँच बन्दर बड़े शैतान, मारे थप्पड़ खींचे कान ।
छः तितली की छटा निराली, उड़ती हैं वह डाली डाली ।
सात शेर जब मारे दहाड़, काँपे जंगल हिले पहाड़ ।
आठ हाथी जंगल से आये, गन्ने पत्ती खूब चबाये ।
नौ मयूर जब नाच दिखाये, सब बच्चे तब ताली बजाये ।
दस तोते जब मुँह को खोले, भारत माता की जय जय बोले ।

गुरूजी पढ़ा दे

लेखिका - श्रीमती नंदनी राजपूत

एबीसीडी पढ़ा दे, मोला शिक्षित बना दे,
अक्षर ज्ञान करा दे, गुरूजी पढ़ा दे।

मैं हव अनपढ़, कुछ नई जानव।
दाई ददा के बात ल मानव।
खेत-खार म काम करके, गुजारा करथव ।
गुरुजी गुजारा करथव।

ए काम ले उबार दे, गुरूजी पढ़ा दे।
कुछ तो सिखा दे, गुरुजी पढ़ा दे।
एबीसीडी पढ़ा दे, मोला शिक्षित बना दे।
अक्षर ज्ञान करा दे, गुरूजी पढ़ा दे।

ऐति ओती किंदरत रहिथौ,
जिंदगी जिए ल नई जानव।
मोर घर आके ददा ला समझा दे,
स्कूल के महत ल बता दे गुरुजी।

महु ल गुरु जी बना दे, गुरूजी पढ़ा दे ।
एबीसीडी पढ़ा दे, मोला शिक्षित बना दे।
अक्षर ज्ञान करा दे, गुरूजी पढ़ा दे।

छत्तीसगढ़ के जिला

लेखिका - श्रीमती नंदनी राजपूत

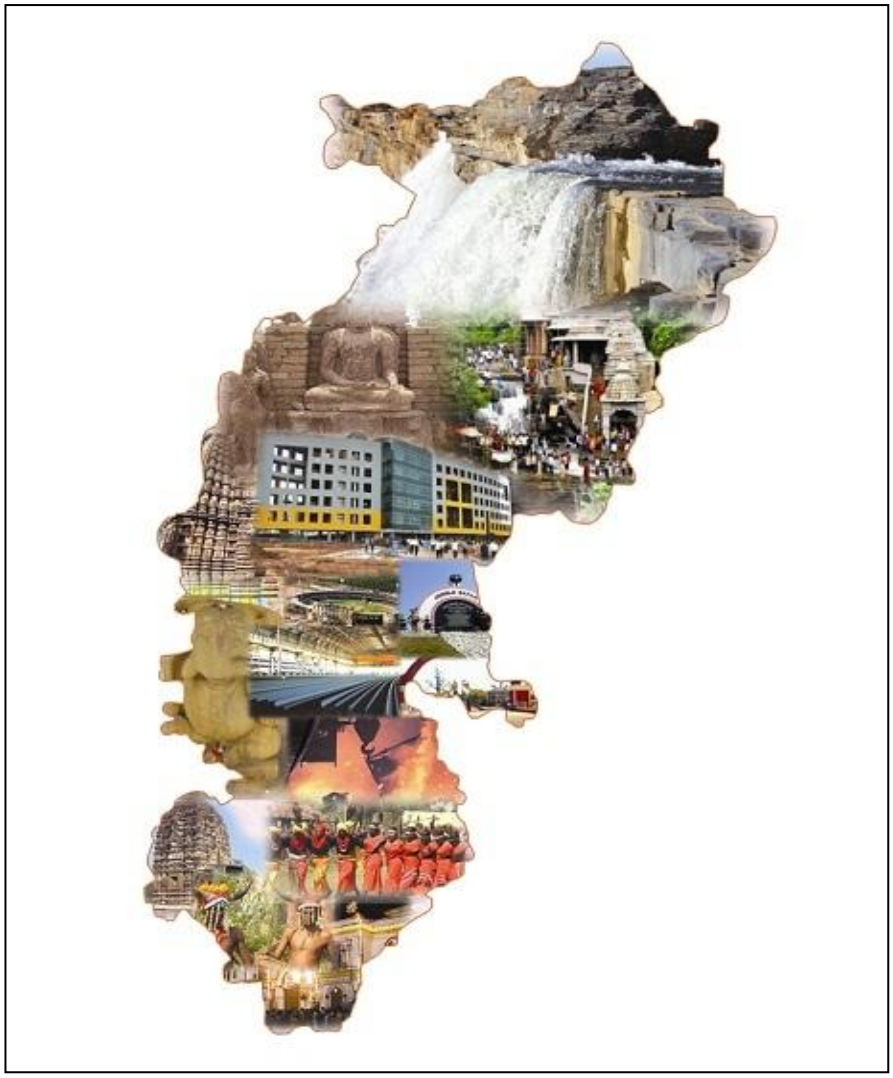

जय छत्तीसगढ़ धरती मैया, चरण में मा माथ नवा देतेव
मैं तोर.. मैं तोर बेटी छत्तीसगढ़ीन, छत्तीसगढ़ गढ़ा देतेव
सेवा बजावत तोर दिन रतिया, जिनगी जम्मो चढ़ा देतेव
मैं तोर बेटी.... मैं तोर बेटी.....

सरगुजा के सरई साल संग, सरग ला पिरथी मा लाहूं
कोरिया कॉलरी के खदान म,
सोना चांदी उपजाहूं
जसपुरिया, रायगढ़िया संग मा,
तेंदू चार खवा देतेव
मैं तोर बेटी .....

बिलासपुर के बिही बोईर के, का कहीं बे सेवाद
कवर्धा राज ओनहारी पाती, कोरबा बिजली वार
जांजगीर चांपा के कोसा लुगरा,
मनटोरा ला पहरा देतेव
मैं तोर बेटी .....

राजनांदगांव रजवाड़ा फूलगे, जइसे बांस के भीरा
दुर्ग-भिलाई शोर उठते से, पखरावन गे हीरा
महासमुंद धमतरी रायपुर म,
धान कटोरा छलका देतेव।
मैं तोर बेटी.....
दंतेवाड़ा बस्तर कांकेर के आदिवासी,
नीच्चट सिधवा, इन्ही ला कहिथे असली भारतवासी
बीजापुर नारायणपुर के चटनी,
खीर खवा देतेव
मैं तोर बेटी.....

कोंडागांव म कोपाबेड़ा मंदिर हावे,
सुकमा म टिन अयस्क
बलरामपुर के राप्ती नदी म
गंगा स्नान करा देतेव
मैं तोर बेटी.....

बालोद ल वाटर सिटी कहींथे,
व्योमतारा हे बेमेतरा
सूरजपुर के पर्यटन स्थल ह,
सबके मन ल मोहा देतेव
मैं तोर बेटी.....

पर्वत बीच म गरियाबंद हे,
सेतगंगा हे मुंगेली
बलौदा बाजार के बैल भैंस ल,
खेत म हल जोतवा देतेव
मैं तोर बेटी.....

सत्ताईस जिला छत्तीसगढ़ बिरही,
नवां नाव धरा देतेव।
मैं तोर बेटी.....

जहाँ सोच, वहाँ शौचालय

लेखक - द्रोण साहू

मेंढक ने कहा,
ओ मछली रानी
कहते लोग तुम्हें
बड़ी सयानी
पर तुम्हारी हरकत
बड़ी बचकानी

जहाँ पर रहती हो
वहीं शौच करती हो
तालाब का पानी
करती हो गंदा
रोज का तुम्हारा
यही है धंधा

फैल रहीं इससे
कई बीमारी
खत्म हो जाएगी
दुनिया हमारी

मछली राजा को
यह बात समझाओ
और अपने घर पर
शौचालय बनवाओ

दीप जले

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

अंधकार चीरकर
मन की पीड़ा दूरकर
उल्लसित मन
सुमन तरंग
ज्योतिर्मय जग में
भीनी सुगन्ध
दीप जले, दीप जले !

अलसाए खेतों में
मेहनत का प्रतिफल हो
बंगले की आभा से
झोपड़िया रोशन हो
मानवता सजोर रहे
हिन्दू न मुस्लिम हो

माटी का नन्हा लोंदा
हाथों में साथ बढे
दीप जले, दीप जले !

घर की खिचडिया सही
भले न पकवान बने
तरसे न बचपन फिर
भूख न शैतान बने
नन्ही सी बिटिया की
आभा न आंच आये
खुशीयो को अपनी
दूजा न रो पाए
दीप जले, दीप जले !

बम और लरियो के
इतनी न धमाके हो
उजड़े न घर बार कोई
अपनो की यादें हो
सरहद सुकून मिले
अमन की बिसाते हो
हाथ बढ़े, गले मिले
दीप जले, दीप जले !

पंख पसारे मोर

लेखिका - श्रीमती अंजूलता भास्कर

नील गगन में काले बादल |
रिमझिम जल बरसाते बादल |

तड़-तड़ कर बिजली है चमके |
कितना अच्छा नाचें मोर ||

रंग बिरंगे पर फैलाकर |
सब मित्रों को पास बुलाकर ||
झूम -झूम कर नाचें मोर ||

देख रहे है चुन्नी मुन्नी |
मचा मचा कर कितना शोर ||

सब्जी गीत

लेखिका - श्वेता तिवारी

करेले की हो रही सगाई
शकरकंद नाचन को आई

लौकी ने मंडप को सजाया
टमाटर ने मेंहदी लगाई
भिंडी ने भोजन पकाया
फूलगोभी ने थाली सजाई

आलू ने आँसू बहाये
कद्दू ने कर दी बिदाई
शकरकंद नाचन को आई

दोस्ताना

लेखक - अजय साहू

दोस्ती तो यारा करना ज़रूरी है
दोस्ती के बिना ये ज़िंदगी अधूरी है

दोस्त हों अच्छे तो दोस्ती का मज़ा है
दोस्ती न करो तो बड़ी सज़ा है

दोस्ती में दोस्त के लिये सब कुछ करना चाहिए
दोस्ती करने के लिए खुशी-खुशी जाइये

दोस्ती का शब्द सचमुच हीरा है
सबसे अच्छा दुनिया में बस दोस्त मेरा है

एक बूंद

लेखक - नेमीचंद साहू

आशा की किरण, दिल के अरमान
एक बूंद प्यासे के लिए अमृत समान

निहारती पलकें, सिसकते बचपन
दर्द से कराहते प्यार का अपर्ण

बीज का समर्पण, मिट्टी का बलिदान
जीवन की बूंद में प्राण के समान

चलती नैय्या, है मझधार
बूंद भर आशा ले जाये पार

किरणों का उजियारा, दीप का प्रकाश
बूंद का सहारा, जीवन की आस

हँसने दीजिए

लेखक - अरविंद वैष्णव

फ़ूल सी बेटियां हैं, इन्हें खिलने दीजिए
पर्यावरण को कभी भी न उजड़ने दीजिए

माना कि गहरा अंधेरा छाता है कभी
दीप उम्मीदों का फिर भी जलने दीजिए

मुस्कुराना भूल से गये है हम सभी
होठो पे हँसी का सुरुर आने तो दीजिए

खुशियां सदा इनके दामन में गिरें
अरविंद, बेटियों को खिलकर हंसने तो दीजिए

मध्याह्न भोजन गीत

लेखक - विकास कुमार हरिहारनो

भोजन को पहले नमन करें,
तब ग्रास हृदय से ग्रहण करें

भोजन तो सबकी जननी है,
वह पालन दे, वह पोषण दे

मन को निर्मल रख सेवन कर,
सात्विकता का हो पूर्ण असर

मन काया को संतृप्त करे,
हे जननि हमेशा हित ही करें

तन सुंदर सुदृढ़ बने मेरा,
मन ऊर्जा का संचार करें।

पहेलियां

लेखक - दिलकेश मधुकर

(1) मुझे उलट कर देखो, लगता हूं मैं नौजवान।
कोई अलग ना रहता मुझसे, बच्चा बूढ़ा और जवान।।

(2) जितनी ज्यादा सेवा करता, उतना घटता जाता हूं।
सभी रंग का नीला पीला, पानी के संग भाता हूं ।।

(3) सिर संग भी है नाता मेरा, बिस्तर से भी नाता।
बोझ उठा कर आपका मैं, मीठी नींद सुलाता।।

(4) देखी रात अनोखी वर्षा, सारा खेत नहाया।
पानी तो पूरा शुध्द था, पर पी ना कोई पाया।।

(5) सरस्वती की सफेद सवारी, मोती जिनको भाते।
करते अलग दूध से पानी, बोलो कौन कहाते?

उत्तर

(1) वायु (2) साबुन (3) तकिया (4) ओस (5) हंस

नवाचारी गतिविधि - अंक ज्ञान

लेखक - खोरबाहरा सोनवानी

उद्देश्य - बच्चों में चार प्रकार के अंक ज्ञान को विकसित करना.

सामग्री- पुरानी पुस्तकों से पाशा, तार,फेविकोल आदि.

गतिविधि

(1) बच्चों को चारों संख्याओं की विशेषता और उनकी उपयोगिता से बच्चो को अवगत कराएंगे.

(2) बच्चे आसानी से एक दूसरे को अलग अलग संख्या को बताते हैं.

(3) क्रम से चारो संख्याओं की विशेषता के साथ उपयोगिता पर भी प्रकाश डालते हैं.

(4) बच्चे समूह में भी कार्य करते है.

लाभ

(1) बच्चा 100 तक के संख्याओं को अंग्रेजी, हिंदी, अंक व शब्द में लिखना सीख जायेंगे.

(2) एक ही माध्यम से एक ही संख्या को बच्चे 4 प्रकार से समझ पाएंगे.

कला - बच्चों के चित्र

बज़ीर कुरैशी जी व्दारा भेजे गए उनके स्कूल के बच्चों के बनाए चित्र

चंद्रमुखी भीमरे का बनाया चित्र

चिनेश का बनाया चित्र

कबाड़ से जुगाड़

संकलन - अनामिका पाण्डे

हमारा पर्यावरण

तिरंगा झंडा

चुटकुले

बच्चा- पिताजी, एक छोटा सा गेट-टु-गेदर है स्कूल में
पिताजी- अच्छा, कौन-कौन आएगा
बच्चा- आप, मैं और प्राचार्य

चिंटू - आज मुझे स्कूल में 100 मार्कस मिले
बंटी- ये तो बहुत अच्छी खबर है यार, ये तो बताओ 100 मार्क्स किसमें मिले
चिंटू - 3 सब्जेक्ट में - गणित में 30 ,अंगेज़ी में 40 और हिन्दी में 30

चम्पू - मम्मी, मुर्गी को गर्म पानी पिला दो
मम्मी - क्यों?
चम्पू - इससे वह उबला हुआ अंडा देगी

चिंटू - एक बार 'बुरा न मानो होली है!' यह कहकर किसी ने मुझ पर रंग फेंक दिया था
पिंटू- फिर तुमने क्या किया?
चिंटू- 'बुरा न मानो दिवाली है!' यह कहकर मैंने उस पर 'बम' फेंक दिया। आज पूरा मोहल्ला मुझे ढूंढ रहा है

<u>विज्ञान के खेल - अपकेन्द्री बल (सेन्ट्रीफयूगल फोर्स)</u>

जब कोई वस्तु गोल घुमाई जाती है तो उसमें एक बल निर्मित होता है जो वस्तु के केन्द्र से बाहर की ओर लगता है. इसे अपकेन्द्री बल या सेन्ट्रीफयूगल फोर्स कहते हैं. इसे एक एक खेल के व्दारा देखा जा सकता है.

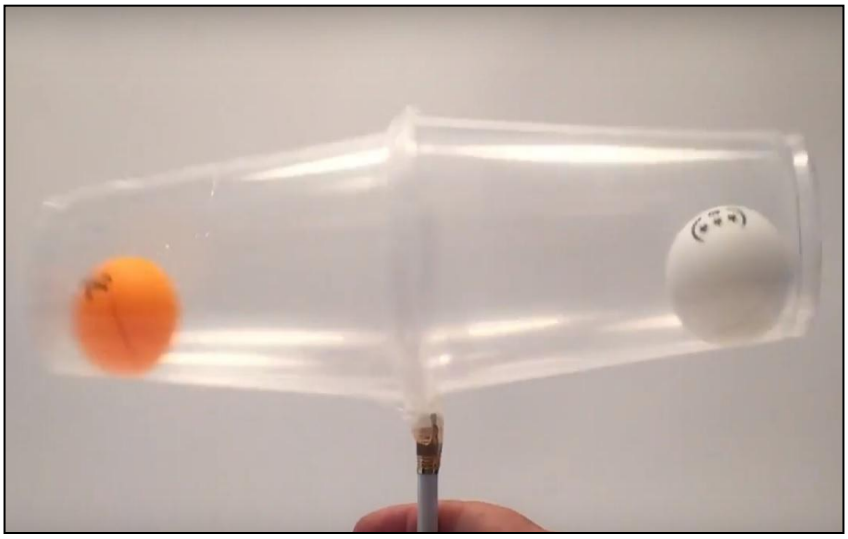

प्लास्टिक के दो पारदर्शी ग्लास लें. अलग-अलग रंग की दो टेबल टेनिस की बाल लें. अब इन बालों को ग्लास में डाल कर दोनों ग्लास को फेवीकाल से एक दूसरे से चिपका दें. इसके बाद एक पेंसिल चित्र में दिखाए अनुसार दोनो ग्लासों पर चिपका

दें. पेंसिल को ज़ोर से घुमाने पर दोनो बाल अलग-अलग दिशा में जाती हैं और ग्लासों की पेंदी तक पहुंच जाती हैं. ऐसा इन ग्लासों के घूमने से बने अपकेन्द्री बल के कारण होता है. ग्लासों को घुमाना बंद करने पर इन बालों को फिर से बीच मे लाया जा सकता है, परंतु जब तक ग्लास घूमते रहते हैं तब तक बाल ग्लासों की पेंदी के पास ही रहती हैं.

भाखा जनउला - छत्तीसगढ़ी वर्ग पहेली

रचनाकार - दीपक कंवर

	1 ज		2			3 धा	
4 गो					5 ब		
							6 ल
		7 बि					
	8 दा			9		10	ध
11 खा			12 फ				
						13 झो	

बाएं से दाएं:- 2 पिता, 4 दूध, 5 जंगल, 7 शिकारी, 8 माँ, 10 इच्छा, 11 मैदान, 12 दरवाजा, 13 सब्जी का रस

ऊपर से नीचे:-1 बुखार, 3 चाँवल के पहले, 4 गोल, 5 मजदूर, 6 तेज चाल चलना, 7 बिल्ली, 8 दाल, 9 बच्चा, 11 खाद

उत्तर

	1 ज		2 द	दा		3 धा	
4 गो	र	स			5 ब	न	
ल					नि		6 ल
वा		7 बि	य	ध	हा		क
		ल			र		र
	8 दा	इ		9 ल		10 सा	ध
11 खा	र		12 फ	इ	का		क
तू				का		13 झो	र